'पत्र' संपादक के नाम

ज्ञानामृत में प्रकाशित सभी लेख यूँ तो शिक्षाप्रद एवं आध्यात्मिक क्षेत्र की नवीन और सत्य जानकारी देने वाले होते हैं परंतु इसके तीन लेख 'संजय की कलम से', 'संपादकीय' एवं भ्राता 'बी. के. रमेश शाह के लेख' समयानुकूल, विशिष्ट शैली और शब्दावली लिए हुए, पाठक के दिल पर अच्छी छाप छोड़ जाते हैं। जून, 2008 में छपी लघु नाटिका 'एक नज़र : पारिवारिक मूल्यों पर' आज के वास्तविक सामाजिक परिवेश और स्थिति पर करारी चोट करती है एवं उपभोक्तावादी संस्कृति की अति से बिखरते हुए मानवीय मूल्यों की शोचनीय समस्या का प्रभावी समाधान प्रस्तुत करती है। अगर आज का इलैक्ट्रॉनिक मीडिया इस प्रकार की पृष्ठभूमि पर आधारित धारावाहिकों अथवा लघु फिल्मों का प्रसारण करे तो स्वस्थ मनोरंजन के साथ-साथ समाज में दिनोंदिन बढ़ती जा रही विकृति को कम करने में मदद मिलेगी।

ज्ञानामृत के पाठकवृंद ज्ञानामृत पत्रिका पढ़ने के बाद संबंध-संपर्क के व्यक्तियों में से कम से कम किसी एक को भी पढ़ने के लिए दें तो उन्हें इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सहज, सरल, जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने वाले राजयोग तथा अन्य शिक्षाओं एवं सेवाकार्यों की सहज जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

के. एल. छाबड़ा, रुड़की

इसमें अतिशयोक्ति नहीं कि 'ज्ञानामृत' विश्व की सर्वोत्कृष्ट पत्रिका है। यह ऐसा ज्ञानकोष है जिससे टपकते एक-एक दिव्य मूल्य रूपी अमृत का पान कर आत्मायें पुष्ट होती हैं। जून, 2008 का दादी जानकी जी का, मम्मा के प्रति अगाध सम्मान व ममत्व से भरा लेख पढ़ते ही गुणदेवी की समीपता का आभास हुआ। जैसे कोई शिकारी अपने शिकार की प्रतीक्षा करता है, वैसे ही मैं ज्ञानामृत की राह देखती हूँ। यह पत्रिका असाधारण है। अनेक समस्याओं का समाधान हमें इसमें प्रकाशित पत्रों के उत्तर से मिल जाता है।

यह पत्रिका अपनी लंबी उम्र को पाये। आपका प्रयास सफल हो रहा है। ज्ञानामृत सबका दिल जीत रही है। पुरुषोत्तम संगमयुग विचारक भाई ब्र. कु. रमेश शाह जी को बहुत आभार व पूरे ज्ञानामृत लेखक मंडल को याद-प्यार, शुक्रिया व रक्षाबंधन की हार्दिक स्नेहभरी बधाइयाँ स्वीकार हों।

ब्र.कु.संध्या,वर्णपुर(प.बं.)

ज्ञानामृत की मधुर महक
जीवन को देती नई चहक
ज्ञानामृत का हर लेख अनमोल
प्रभु प्रीत का है मेलजोल
है हर आत्मा एक भँवरा
चाहती है फूलों पर पहरा
ज्ञानामृत का करके रसपान
विकार मिटाकर, करो नई पहचान

शम्भू दयाल सैनी,
ढाणी-बाकली (सीकर)

ब्रह्माकुमार भ्राता नरेश जी, जुलाई 08 की ज्ञानामृत में 'ज्ञानेन्द्रियों में जीभ का महत्त्व' लेख पढ़ने को मिला। अतीव आनंद प्राप्त हुआ। आपने जीभ का अति सुंदर मनोकायिक एवं आध्यात्मिक विश्लेषण किया है। 'जीभ प्रबंधन' पर वर्कशॉप की आपकी राय ने उत्सुकता की परवान (सीमा) को बढ़ा दिया है।

रहीम कवि ने लिखा है,

'रहिमन जिव्हा बावरी,
कह गई सरग पताल
आपन कह अंदर हुई,
जूते खात कपाल।'

कायिक रूप से जीभ भी बीमार तो होती है पर आपने मन-आत्मा की बीमारी का संबंध जीभ से सही जोड़ा है। मेरी आपसे विनती है कि अगला लेख आप जीभ प्रबंधन पर लिखें।

डा.एस.एम. जैन, लोनी (महा.)

❖

बुद्धि का हलकापन व महीनता ही सबसे सुंदर व्यक्तित्व है।